उपदेशप्रासाद भाग-३

फोल्डर नं.	००२६०४
ग्रन्थ	उपदेश प्रासाद भाग-३
लेखक	विजयलक्ष्मीसूरिजी
प्रकाशक	सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला – अहमदाबाद
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	
पृष्ठ	५१२

मुख्य टाईटल

किञ्चित प्रास्ताविकम

ઉપદેશપ્રાસાદ ગ્રંથ પ્રકાશનમાં સુકૃત સહભાગીની યાદી

प्रस्तावना

अनुक्रमणिका

त्रयोदश स्तम्भ

मध्यमड्गलं, जिनभक्तिफलादिकं च – दशार्णभद्र ---------- १

जिनभक्तिफलविधानम – भरतचक्र्यादिनृपा ----------२

शत्रुञ्जययात्राफलम – कुमारपाल ---------- ४

स्नाविधि, जिनपूजायां वस्त्रविधिश्च – कुमारपाल ----------८

पुष्पाधानयनविधि – कुमारपालपूर्वभव ---------- १०

मानादिदोषरहितजिनचैत्यविधापनम – सम्प्रतिनृप ----------१२

जिनस्थापनावर्णनम – द्रोणाचार्यादि ---------- १५

नवरात्रे देव्यग्रे हिंसा – यशोधर ---------- १७

चैत्यशब्दार्थ मूर्तिपूजासिद्धिश्च – शय्यंभवसूरि ---------- १९

पूजाविधि – जिनदासश्रेष्ठी ---------- २२

अविधिकरणादकरण वरमिति वदत शिक्षा – चित्रकार ---------- २५

चैत्यद्रव्यापलपने दोष – शुभंकर ---------- २८

अल्पस्यापि देवद्रव्यस्यादनेऽल्पदोष – सागरश्रेष्ठी ----------३१

चैत्यानि सावधानीति यो वक्ति तस्य शिक्षा – सावधाचार्य ---------- ३३

नमस्कारगणनकालफलम – बलराज ---------- ३५

चतुर्दश स्तम्भ

तीर्थकरनामकर्मोपार्जनहेतव विंशति स्थानकानि ---------- ३८

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जिनच्यवनकल्याणकम ---------- ४०
ज्ञानत्रयसहितं जिनच्यवनम ---------- ४१
ईन्द्रकृतजन्मोत्सव ---------- ४४
शैशवेऽपि जिना क्रीडापराङ्जुखा ---------- ४९
केवलज्ञानोत्पत्ति, समवसरणं, देशना च – लौकिकदृष्टांत ---------- ५०
देशनासमयवर्णनम ---------- ५३
समवसरणस्थजिनदेशना, जीवानां पडिक्त चतुष्कम ---------- ५६
गृहीतं व्रतं जीवभेदेन चतुर्धा – शालिकणपञ्चकम ---------- ५९
अन्त्यक्रिया ---------- ६०
कालस्वरुपम, भावितीर्थकरादिशलाकापुरुष ---------- ६२
भाविचतुर्थारकस्वरुपम ---------- ६७
सम्प्रति दुःषमारकस्वरुपम – कल्किवर्णनम ---------- ६९
अनागतजिनवर्णनम ---------- ७३
दीपोत्सवदिनस्वरुपम – सुहस्तिसंप्रती ---------- ७४

पञ्चदश स्तम्भ

ज्योत्कारस्वरुपमं – सुहस्तिसंप्रती ---------- ७८
पुजाविधि – दमवन्ती ---------- ८०
दीपपूजा – धनवणिक ---------- ८३
अल्पाहारश्रुतेनापि महासुखम – यवर्षि ---------- ८५
ज्ञानस्य विराधना न कार्या (ज्ञान पञ्चमीव्रतम) – गुणमञ्जरीवरदत्तौ ---------- ८७
अभयदानम – धननामारामिकश्रेणिकादय ---------- ९५
दानधर्म – विविधलघुदृष्टान्ता ---------- ९५
पात्रदानफलम – धन्यश्रेष्ठी ---------- ९८
धर्मचातुर्विध्यम – सौभाग्यदेवीजिनदासौ ---------- १०१
विवेकिकृत्यम – कपिल---------- १०४
शुद्धाशुद्धव्रतपालनफलम – पुण्डरीककण्डरीकौ ---------- १०६
स्तयङ्ग – प्रभाकर ---------- १०८
अन्तरङ्गशत्रुजय ---------- ११०
कर्मयोगत पतित्वा पुन स्वं तारयेत – सेलकसाधु ----------११२
कार्तिकीमहिमा – द्राविडवालिखिल्यौ ---------- ११५

षोडश स्तम्भ

लेश्यास्वरुपम – प्रियंकरनृप ---------- ११७
अविमृश्यकरणनिषेध – आम्रवृक्षव्वेगाधा ---------- ११९
सहसाकरणनिषेध – पतत्रिमारकनृप----------१२१
पञ्चभि कारणै कार्यसिद्धि ---------- १२४

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भाविभाव – रावण ---------- १२६
कालदेवादिभ्योऽपि कर्मणो बलवत्त्वम – रिपुमर्दन ---------- १२९
पञ्चकारणसमुदये सत्येव कार्यसिद्धि – क्षुल्लककुमार----------१३१
सगुणचिन्तनम – कालिकाचार्यशालिवाहनौ ---------- १३७
द्रव्यवन्दनभाववन्दने – शीतलाचार्य ---------- १३७
ज्ञानयुक्तक्रियाया साफल्यम – धर्मबुद्धिर्लधुसाधु ---------- १३८
नवनिदानस्वरुपम – तामलितापस ---------- १४०
चत्वार उपदेशानर्हा तेषामाधो – नन्दनतलवरादय रागान्वित ---------- १४२
सप्तमनिह्नव – गोष्ठामाहिल ---------- १४४
बोटिकवक्तव्यता – शिवभूति ---------- १४८
श्रुतनिन्दका (ढुंढका) – द्राविंशतिगोष्ठिकनरा ---------- १५०
सप्तदश स्तम्भ
क्रोधफलम – अमरदत्तमित्रानन्दौ ---------- १५३
मानत्यागफलम – बाहुबली ---------- १५८
मायापिण्डम – आषाढभूति ---------- १६१
लोभोऽनर्थकृत – सागरश्रेष्ठी ---------- १६४
लोभफलम – सुभूमचक्री ---------- १६७
क्रोधपिण्ड – मासक्षपणसाधु ---------- १६९
लोभपिण्ड – सुव्रतसाधु ---------- १७१
दशमाद्धाप्रत्याख्यानभेदान फलं चाह – कुविन्दादय ---------- १७३
दशप्रत्याख्यानम – दामन्नक ---------- १७७
व्रतखण्डनफलम – मत्योदर---------- १८०
मौनैकादशी – सुव्रतश्रेष्ठी ---------- १८३
सम्यकत्वे शङ्का न कार्या – आषाढसूरि ---------- १८७
मिथ्यात्वभेदा – पालकऽभव्य ---------- १९०
मिथ्यात्वस्य दुस्त्यजत्वम – मंखलिपुत्र (गोशाल) ---------- १९३
प्रभोराशातनाफलम – मंखलिपुत्र ---------- १९६
अष्टादश स्तम्भ
ज्ञानाचार प्रथम – सागराचार्य ---------- १९९
अस्वाध्यायकाले स्वाध्यायनिषेध – क्षुल्लकसाध्वादय ---------- २०२
द्वितीयो विनयाचार – स्थूलभद्रचण्डरुडशिष्यौ ---------- २०५
तृतीयो ज्ञानाचार – नैमित्तिकौ द्रौ ---------- २०८
उपधानवहनाख्यश्चचुर्थ ----------२११
योगबहुमान – मासतुसमुनि ---------- २१४
योगोद्रहनस्थैर्यम – आर्याषाढसूरि ---------- २१५

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनिह्नवाख्य पञ्चमाचार – रोहगुप्त निह्नव षठ ---------- २१८
व्यञ्जनानिह्नवाख्य षठ श्रुताचार – कुमारपालादय ---------- २२२
अर्थानिह्नवाख्य सप्तमाचार – हेमचन्द्रादय ---------- २२५
सूत्रार्थनिह्नवाख्योऽषम – अभयदेवसूरि ---------- २२९
शुभाशुभश्रुतस्य सम्यगर्थ कार्य – क्षुल्लकमुनि भेरी च ---------- २३१
निःशंकाख्य प्रथमो दर्शनाचार – पञ्चमनिह्नगंगाचार्य ---------- २३४
निष्काक्षाख्यो द्वितीयो दर्शनाचार – क्षुल्लकशिष्य, चतुर्थनिह्नवोऽश्वमित्रश्च ---------- २३७
निर्विचिकित्साख्यस्तृतीयो दर्शनाचार – भोगसारश्रेष्ठी ---------- २४०

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org